IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

अद्वैतवेदान्त में प्रत्यक्ष-सम्प्रत्यय

डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्र

विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर , दर्शनशास्त्र विभाग

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, म.प्र.

drgovindmishra@gmail.com

शोध सार:

भारतीय दार्शनिक चिन्तन में अविद्या समस्त दुखों का मूल कारण है | अविद्या एवं उसके संस्कारों को नष्ट करके सत्यज्ञान का बोध कराना ही भारतीय दर्शन का उद्देश्य है | यहाँ सत्य एवं असत्य के निर्णय हेतु लक्षण एवं प्रमाणों का निर्देश है- 'लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः | प्रमाणों के द्वारा सत्यासत्य परीक्षण ही न्याय है- प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय:[i]| भारतीय दर्शन में यथार्थ ज्ञान (प्रमा) प्राप्ति के साधन को प्रमाण कहा गया है जिनमे प्रत्यक्ष ,अनुमान,शब्द,उपमान.अर्थापत्ति , अनुपलब्धि आदि प्रमाण प्रमुख हैं| यद्यपि प्रमाणों की संख्या के सम्बन्ध में सभी दर्शनों में मतैक्य नहीं है, नास्तिक चार्वाक केवल एक (प्रत्यक्ष) , बौद्ध एवं वैशेषिक दर्शन दो (प्रत्यक्ष,अनुमान), जैन, सांख्य, योग, रामानुज तीन (प्रत्यक्ष ,अनुमानएवं शब्द), न्याय दर्शन चार (प्रत्यक्ष ,अनुमान,शब्दएवं उपमान.) प्रभाकर मीमांसा पांच (प्रत्यक्ष ,अनुमान,शब्द,उपमान एवं अर्थापत्ति ,), भट्ट मीमांसा एवं अद्वैत वेदान्त छः (प्रत्यक्ष ,अनुमान,शब्द,उपमान.अर्थापत्ति एवं अनुपलब्धि) ,तथा पुराण आठ प्रकार के प्रमाण (प्रत्यक्ष ,अनुमान,शब्द,उपमान.अर्थापत्ति , अनुपलब्धि, ऐतिह्य एवं संभव) मानते हैं | प्रमाणों की संख्या में मतभेद होने के बावजूद सभी ने प्रत्यक्ष को ज्ञान का प्रथम साधन स्वीकार किया है | इसप्रकार प्रत्यक्ष को प्रथम/सर्वश्रेष्ठ प्रमाण स्वीकार करने में सभी वैदिक या वैदिकेतर दर्शन एक मत हैं यद्यपि प्रत्यक्ष के स्वरूप को लेकर उनमे आपसी मतभेद विद्यमान हैं |

---

[i] न्यायदर्शन वात्स्यायन भाष्प- 1/1/1